वर्ष 8, अंक 2

ISSN 2456-3838

पिक्चर प्लस

सितंबर-अक्टूबर 2024 ₹ 70

ज़िन्दगी का बायस्कोप

बेमिसाल @82

ISSN : 2456-3838
Licence No. F2 (P19) PRESS 2016

पिक्चर प्लस
वर्ष 8 अंक 2; सितंबर-अक्टूबर, 2024
(मासिक/द्विभाषिक हिंदी-अंग्रेजी)

संपादक
संजीव श्रीवास्तव

संपादन सहयोग
कल्पना कुमारी

कवर डिजाइन
ज़ाहिद मोहम्मद खान

लेआउट डिजाइन : शाश्वती

पंजीकृत पता
37/ए, गली नंबर 2,
प्रताप नगर, मयूर विहार, फेज-1
दिल्ली-110091

मूल्य- 70 रुपये (एक प्रति)
वार्षिक - 1,000 रुपये (व्यक्तिगत)
5,000 रुपये (संस्थागत)

आप डिजिटल संस्करण को नॉटनल (www.notnul.com) से ख़रीद सकते हैं।

संपर्क : 9313677771
ईमेल : pictureplus2016@gmail.com

नोट : सभी रचनाओं में व्यक्त विचारों से पत्रिका की संपादकीय नीति तथा लेखक-प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं। पत्रिका के किसी भी पक्ष से संबंधित कानूनी निपटारे का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

(सभी चित्र इंटरनेट से साभार)
सभी पद अवैतनिक

अनुक्रम

04 संपादकीय : चलती का नाम गाड़ी : सम्मान मुकाम नहीं होता!

कवर स्टोरी: बेमिसाल@82

06 अरविन्द कुमार : जब तक शरीर तब तक काम
10 ख्वाजा अहमद अब्बास : सात हिंदुस्तानी में एंग्री यंग मैन के बीज
12 प्रहलाद अग्रवाल: दीवार के उस पार
18 डॉ.इंद्रजीत सिंह : भारत रत्न के सुपात्र
19 जावेद अख्तर: व्यावसायिक सिनेमा छोटा पड़ गया
20 संजीव श्रीवास्तव : इंकलाब की इबारत
24 जयनारायण प्रसाद : ₹300 के करोड़ों बनने की कहानी
26 दिलीप कुमार पाठक : वंश की विभूति नवल
31 डॉ. सुजाता मिश्र : स्त्री2: रूढ़िवादी मानसिकता पर तीखा व्यंग्य

हिंदी विंदी : सिनेमा की भाषा पर दीप भट्ट की परिचर्चा

33 प्रेम चोपड़ा: नई पीढ़ी हिंदी भी पढ़े
34 सुभाष घई : मुंबई वाले साउथ से सीखे
35 रज़ा मुराद : माहौल बदल सकता है
36 यशपाल शर्मा : हिंदी की बदौलत सिनेमा की बुलंद इमारत
37 श्याम रावत: भाषा से लगाव की बात
38 जॉनी लीवर : अपनी भाषा को सम्मान मिले
39 भूपेंद्र कैंथोला : दर्शकों को इससे कोई मतलब नहीं
41 अरुण बख्शी : अपनी भाषा मोहब्बत की
42 हेमंत पांडे : मुझे हिंदी से कोई दिक्कत नहीं

मिथुन चक्रवर्ती विशेष

44 कल्पना कुमारी: धनुष-तीर से गिटार तक
46 जयनायारण प्रसाद: मृगया, मिथुन और मृणाल
49 दिनेश चौधरी : (शोले की निशानियां) गब्बर से सिर्फ गब्बर ही बचा सकता है!
52 राजपाल राजे: प्रताप सिंह की नई किताब-सिनेमा लेखन की नई धार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक संजीव श्रीवास्तव द्वारा 37-ए, गली नं. 2, प्रताप नगर मयूर विहार, फेज-1, दिल्ली–110091 से प्रकाशित। संपादक-संजीव श्रीवास्तव। चंद्रशेखर प्रिंटर्स, WZ/439/ नारायणा विलेज, नई दिल्ली-110026 से मुद्रित।

मिथुन चक्रवर्ती को मिला 54वां दादा साहेब फाल्के अवॉर्ड

8 अक्टूबर, 2024 को नई दिल्ली में राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के हाथों भारतीय सिनेमा के सर्वोच्च सम्मान दादा साहेब फाल्के अवॉर्ड (2022) ग्रहण करते मिथुन चक्रवर्ती

सम्मान मुकाम नहीं होता!

हिंदी सिनेमा के महानायक अमिताभ बच्चन ने दादा साहेब फाल्के सम्मान प्राप्त करने के समय एक अहम बात कही थी। जिसकी आज चर्चा लाजिमी है। राष्ट्रपति से सम्मान हासिल कर सबसे पहले तो उन्होंने आभार जताया। उसके बाद अंत में उन्होंने ऐसी बात कही, जिसे तंज भी कहा जाये तो गलत नहीं होगा। उन्होंने कहा- 'जब मुझे यह सम्मान देने की घोषणा हुई तो मेरे मन में एक संदेह उठा कि कहीं ये मेरे लिए संकेत तो नहीं कि भाई साहेब आपने बहुत काम कर लिया, अब घर बैठकर आराम कीजिए।' तुरंत हॉल में हंसी फूटी। अमिताभ ने अपने सधे हुए पॉज से उस हंसी को पूरी तरह से प्रस्फुटित होने दिया। फिर कहा- 'देवियो और सज्जनो, अभी भी थोड़ा-बहुत काम बाकी है, जिसे पूरा करना है। आगे भी ऐसी संभावनाएं बन रही हैं, जहां मुझे काम करने का अवसर मिलेगा।' इसके बाद वह नजर नीची किये मुस्कराते हुए चुहल करते हैं। उनकी आखिरी पंक्ति में तो सबसे अधिक तंज था, वह कहते हैं-'अगर इसकी पुष्टि हो जाये तो देवियो और सज्जनो- बड़ी कृपा होगी।' इन पंक्तियों के साथ उनका संबोधन खत्म हुआ। हॉल में एक बार फिर तालियां और ठहाके- दोनों एकसाथ गूंजे।

अमिताभ बच्चन को साल 2018 का दादा साहेब फाल्के सम्मान 2019 में मिला था। उनके संबोधन की इन पंक्तियों पर गौर कीजिए और साल 2024 ही नहीं बल्कि 2025 की उनकी आने वाली फिल्मों की सूची पर नजर डालिये तो उन्हीं की बार-बार दोहराई हुई पंक्तियां याद आती है- *तू न रुकेगा कभी, तू न थकेगा कभी, कर शपथ...।* अमिताभ बच्चन वाकई कभी न रुकने वाले कलाकार हैं। जीवन के बयासी साल पूरे करने पर पिक्चर प्लस परिवार की ओर से उनको हार्दिक बधाई। 'कल्की' उनकी सबसे ताजा फिल्म थी। अस्सी पार की उम्र में अपने अभिनय से उन्होंने अपने प्रेमियों को अस्सी के दशक की याद दिला दी। वाकई वे शख्स 'बेमिसाल' होते हैं जो जीवनपर्यंत ऊर्जा से ओत-प्रोत होते हैं। अमिताभ अपनी ही फिल्म 'मोहब्बतें' के मशहूर डायलॉग 'परंपरा, प्रतिष्ठा और अनुशासन' के प्रतीक हैं। यह साधना ही उनकी सफलता और कर्मठता का सबसे बड़ा राज है। अमिताभ बच्चन ने साबित कर दिया कि कितना भी बड़ा सम्मान हो वह किसी कलाकार का मुकाम नहीं होता। सच, अमिताभ-रजनीकांत जैसे आखिर कितने कलाकार यह सम्मान प्राप्त करने के बाद भी सक्रिय हैं?

मित्रो, यह महीना हर साल दादा साहेब फाल्के सम्मान की घोषणा करने और राष्ट्रपति के हाथों किसी एक फिल्म कलाकार को पुरस्कार प्रदान करने का होता है। इसी के साथ चर्चा शुरू हो जाती है कि जिस कलाकार को यह सम्मान मिला है, क्या वह इसके लिए सुयोग्य हैं या दूसरे कलाकार से अधिक योग्य हैं? आदि। यह सवाल सालों पुराना है। एनटीआर, राजेश खन्ना, वैजयंती माला और धर्मेंद्र जैसे दिग्गजों को भी यह सम्मान नहीं मिला। प्राण और वहीदा रहमान को सम्मानित करने में काफी देरी हुई। अब साल 2022 का दादा साहेब फाल्के सम्मान 2024 में मिथुन चक्रवर्ती को दिया गया है। पिक्चर प्लस की ओर से उन्हें बधाई। पिछले दिनों वरिष्ठ फिल्म लेखक और समीक्षक अजय ब्रह्मात्मज जी ने इस संबंध में एक सुझाव सामने रखा था कि संभव हो तो एक साल में दो या तीन कलाकारों को दादा साहेब फाल्के सम्मान दिये जायें। हमारा कहना है- फिल्मी जमात को इस संदर्भ में अपनी राय सरकार तक पहुंचानी चाहिए। नये और युवा कलाकार अमिताभ बच्चन या रजनीकांत को देखकर यह भी मानें कि सम्मान मुकाम नहीं होता। मन का काम मन से करना और लोगों का मन जीत लेना ही सबसे बड़ा मुकाम है। अस्तु।

आपको यह अंक कैसा लगा, जरूर लिखें। सादर।

आपका संपादक

संजीव श्रीवास्तव

'जब तक शरीर तब तक काम'

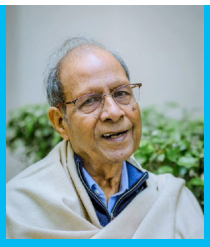

अरविंद कुमार

सन् 1993 से 1996 तक मैं बेंगलूरु में था समांतर कोश को अंतिम रूप देने के लिए। उन्हीं दिनों अमिताभ बच्चन का व्यापारी रूप सामने आया। पहले एक नई तरह का उत्पाद बनाना और बेचना शुरू किया था। कोई पैकेजिंग मैटिरियल। पर वह चल नहीं पाया। दोष मैनेजरों को दिया गया। कहते हैं तब अमिताभ की हालत ख़स्ता थी। इसके बाद एक अनोखी स्कीम सामने आई– टैलेंट कंटेस्ट। अख़बारों में बड़े विज्ञापनों में अमिताभ के फ़ोटो के साथ आमंत्रण फ़िल्म में काम करने के उत्सुकों को आवेदन देने का। अनोखापन यह था कि प्रति आवेदन पत्र किसी भी डाकख़ाने में सौ रुपए दे कर ख़रीदें और अपने फोटो संलग्न करके अमिताभ के पास भेजें। डाकख़ानों में भीड़ लग जाती।

सन् 1995 में अमिताभ ने एक कंपनी बनाई– 'एबीसीऐल' (अमिताभ बच्चन कॉरपोरेशन लिमिटेड)। फ़िल्म निर्माण के लिए हॉलीवुड जैसी कंपनी। इसके दो प्रमुख काम होंगे– 1. फ़िल्म निर्माण से लेकर डिस्ट्रीब्यूशन तक सभी गतिविधि। 2. ईवेंट मैनेजमैंट। 150 का स्टाफ़ भर्ती कर लिया गया। तीन से आठ करोड़ लागत की दो फ़िल्मों ('बांबे' और 'बैंडिट क्वीन') के डिस्ट्रीब्यून अधिकार लिए। दोनों सफल रहीं। साथ ही 'एबी बेबी', 'दिलजले', 'रक्षक', 'तेरे मेरे सपने' जैसी फ़िल्मों का संगीत भी ख़रीदा। वह भी मुनाफ़े का धंधा साबित हुआ। लेकिन कहावत है जिसका काम उसी को साजे। 1996 में कंपनी ने 'मिस वर्ल्ड पैजेंट' और 'बीपीएल डांडिया' का ईवेंट मैनेजमैंट का जिम्मा लिया। 1996 का 'मिस वर्ल्ड पैजेंट' बंगलौर में था। 88 प्रत्याशियों में से ग्रीस की ईरेने स्क्लिवा को ख़िताब मिला।

लेकिन एबीसीएल को मुनाफ़ा तो हुआ ही नहीं, चार करोड़ से भी ज़्यादा का घाटा हुआ और बदनामी अलग से। जिस स्पैस्टिक्स सोसाइटी की चैरिटी के नाम पर शो किया गया था, उसने शोर मचाया कि उसे एक पैसा भी नहीं मिला।

सन् 1999 लाया एबीसीएल भारी संकट काल। फ़िल्म निर्माण